

डॉ. केनेथ मैथ्यूजः उत्पत्तिः सत्र ४ बगीचे की कहानीः भाग ८

© 2024 केनेथ मैथ्यूज और टेड हलिडेब्रांट

यह डॉ. केनेथ मैथ्यूज और उत्पत्ति की पुस्तक पर उनकी शक्ति है। यह सत्र 4 है, बगीचे की कहानी, भाग 2, उत्पत्ति 2:4-3:24।

सत्र चार में बगीचे के बाहर क्या हुआ, इस पर चर्चा की गई है। सत्र तीन, भाग एक और दो में, हमने बगीचे में होने वाली घटनाओं पर ध्यान केंद्रित किया, जैसा कि उत्पत्ति के अध्याय दो और तीन में वर्णित है।

प्रथम मानव परिवार के इतिहास में जो कुछ हुआ, उसके महत्व को समझने के लिए, हमें अध्याय दो और तीन में जो कुछ भी मिलता है, उसे फिर से पढ़ना चाहिए ताकि पाठक को बगीचे के बाहर होने वाली घटनाओं को बेहतर ढंग से समझने के लिए तैयार किया जा सके। पहली बात जो हम देखते हैं वह हमारे लिए महत्वपूर्ण है, वह है पद 14 से 19 में न्याय की भविष्यवाणियाँ। हमारे लिए इससे जो हासिल करना महत्वपूर्ण है, वह यह है कि न्याय की इन भविष्यवाणियों में जो कुछ भी है, वह आदेश के अर्थ में निर्देशात्मक नहीं है, बल्कि यह वर्णनात्मक है कि भविष्य में क्या होगा, सर्प की संतान और स्त्री की संतान के बीच होने वाली लड़ाई के संदर्भ में, जिसका परिणाम अंततः स्त्री की संतान की जीत होगी।

बीच के अंतरिम काल में, एक निरंतर संघर्ष होगा, और हम देखेंगे कि यह कैसे ऐतिहासिक रूप से दुष्टों के माध्यम से काम करेगा जो परमेश्वर की बातों का विरोध करते हैं और फिर धर्मी लोग जो परमेश्वर के वादों और उसके चरित्र के अनुरूप हैं। न्याय का दूसरा दैवीय वाक्य स्त्री से संबंधित है, और एक तरफ, यह मार्ग चर्च में पुरुषों और महिलाओं के बीच संबंधों के बारे में और घर में भी काफी बहस का स्रोत रहा है। स्त्री के बारे में न्याय के दैवीय वाक्य से हम जो समझ सकते हैं वह यह है कि, कुछ अर्थों में, वह अपने पति के अधीन होगी।

अब, मैं जल्दी से यह कहना चाहता हूँ कि यह नागरिक मामलों से संबंधित नहीं है। यह चर्च और परिवार से संबंधित है, और सबसे पहले, सबसे महत्वपूर्ण बात, परिवार और फिर चर्च में ईश्वर का परिवार। लेकिन जब बात समाज की आती है, जैसे कि सरकार और वाणिज्य और कई अन्य क्षेत्रों, चर्चित में महिलाओं की भूमिका, तो यह इससे संबंधित नहीं है।

जब यह पद 16 के अंतिम भाग को पढ़ता है, फिर से, मैं दोहराना चाहता हूँ कि यह वर्णनात्मक है। बाइबल में ऐसा कोई स्थान नहीं है, और जब आप प्रेरित पौलुस पर विचार करते हैं, जिन्होंने विवाह में पुरुष और महिला के रश्ति के बारे में बात की, और चर्च में भी, चर्च में पुरुषों और महिलाओं के रश्ति के बारे में, तो आपको कोई भी जगह नहीं मिलेगी जहाँ आपको पुरुषों को महिलाओं पर शासन करने का आदेश, कोई उपदेश मिलेगा। वास्तव में, आप प्रेरित पौलुस की ओर से विपरीत प्रवृत्ति पाते हैं, जो पुरुषों से

अपनी पतनियों के साथ परेम से पेश आने का आग्रह करते हैं, जैसा कहिम इफसियों के अध्याय 5 में वर्णित पाते हैं। और उसी अंश में, पतनी को अपने पति के प्रति सम्मान दिखाना है।

यहाँ जो सबसे महत्वपूर्ण है वह है व्यवस्था। व्यवस्था एक ऐसी चीज़ है जसि सृष्टि के अध्यादेश के संदर्भ में समझा जाता है, जैसा कहिम अध्याय 1 और 2 में पाते हैं। और फिर आपको अध्याय 3 में याद होगा, एक उलटफेर, एक अव्यवस्था है, और फिर न्याय के दैवज्ज पुनःव्यवस्थिति करते हैं, पुनःसंगठित करते हैं। ईश्वर संगठनात्मक संरचना, संतुलन और समरूपता को पसंद करता है, क्योंकि यही वह है जो ईश्वर के भीतर पाया जाता है, और हम थोड़ी देर में उस विचार पर वापस आएँगे।

हम पाते हैं कि इच्छा और नियम का क्या अर्थ है, इस बारे में कुछ बहस है। हम पाते हैं कि ये दोनों शब्द उत्पत्ति अध्याय 4, श्लोक 7 में फिर से पाए जाते हैं। और मैं इच्छा और नियम को समझाने के लिए इसका सहारा लेता हूँ, क्योंकि यह एक ही संदर्भ में आता है। बहुत से लोग सोचते हैं कि इसका उनके यौन संबंधों से कुछ लेना-देना है, क्योंकि श्लोक 16 का पछिला आधा भाग संतानोत्पत्ति की बात करता है।

हालाँकि, मुझे लगता है कि अध्याय 4 में भी यही शब्द हैं, जो यहाँ इस्तेमाल की गई शब्दावली को समझाने में बहुत उपयोगी होंगे। अध्याय 4, श्लोक 6 की ओर मुड़ते हुए, तब प्रभु ने कैन से कहा, यह हाबिल के बलदान और पूजा की स्वीकृति से संबंधित है, जबकि कैन के बलदान और पूजा की पेशकश को अस्वीकार करना। कैन इस बात से बहुत क्रोधित हुआ, और प्रभु ने उससे कहा, तू क्रोधित क्यों है? तेरा चेहरा क्यों उतरा हुआ है? यदि तू सही काम करता है, तो क्या तूझे स्वीकार नहीं किया जाएगा? और यहाँ हम श्लोक 7 के महत्व पर आते हैं। यदि तू सही काम करता है, तो क्या तूझे स्वीकार नहीं किया जाएगा? लेकिन यदि तू सही काम नहीं करता, तो पाप तेरे दरवाजे पर घात लगाए बैठा है।

फिर, यहाँ एक छर्वा है कि पाप किस तरह से घर के दरवाजे पर होगा। और वह जानवर जो दुबका हुआ है, और इसे जानवर के लिए रूपक के रूप में इस्तेमाल किया जाता है, पाप आपके दरवाजे पर एक जानवर की तरह दुबका हुआ है। दूसरे शब्दों में, यदि आप गलत काम करके जानवर को भड़काते हैं, तो जानवर हमला करेगा।

यह मुझे कुछ हद तक एक कुतूह की याद दिलाता है जो बाहर कुछ सुनता है और फिर कुतूहा हरकत में आता है और भौंकता है। और यह कुछ हद तक उस समकालीन छर्वा की तरह है जसि हम यहाँ चित्रित पाते हैं। तो, पाप आपके दरवाजे पर दुबका हुआ है, आप पर झपटने के लिए तैयार है।

यही पर अध्याय 3 की हमारी भाषा काम आती है। यह पाप है, इच्छाएँ, वही शब्द, आपको पाने की इच्छाएँ। दूसरे शब्दों में, आपको नियंत्रित करने की इच्छाएँ।

लेकिन आपको यहाँ NIV में लिखा है कि शासन करना चाहिए, लेकिन आपको इसमें महारत हासिल करनी चाहिए, आपको इसे नियंत्रित करना चाहिए, ताकि बिलगाम क्रोध के परिणामों से बचा जा सके जो आपके भाई, हाबिल की हत्या का कारण बनेगा। और, बेशक, अध्याय 4 में यही होता है। इसलिए, मुझे लगता है कि श्लोक 16 में जो वर्णित है वह लोगों का भविष्य का संघर्ष होगा, जैसा कहिम कहते हैं। पति और पत्नी के बीच उनके घरेलू जीवन में संघर्ष होगा, और यह घर में पापी होने के प्रभावों में से एक है, जो विवाह के माध्यम से एक दूसरे से संबंधित हैं।

लेकनि आदेश देने की नहीं बलकनियंत्रण करने की इच्छा है। पुरुषों और महिलाओं के लिए परमेश्वर ने जो आशीर्वाद की कल्पना की है, उसे प्राप्त करने में परेम, आपसी सनेह और उद्देश्य की एकता की आज्ञाकारी भावना नहीं होगी। हमें याद है कि अध्याय 1, श्लोक 28 में संतानोत्पत्ति के आशीर्वाद का वादा किया गया था।

तो यहाँ पाप ने, सबसे गंभीर तरीके से, परमेश्वर की मंशा को प्रभावित किया है कि एक परमपूर्ण संबंध हो, न कि एक संघर्ष जो कि प्रत्येक की इच्छा, पत्नी और पति, अपने जीवनसाथी को अभिभूत करने, जीतने या नियंत्रित करने के लिए निरंतर बना रहता है। फरि दूसरा संबंधित है, और अगला, वास्तव में तीसरा, पुरुष से संबंधित है। और यहाँ एक वर्णन है कि एक साधक के रूप में पुरुष के व्यवसाय का क्या होगा।

और अब उसे एक दर्दनाक परेशिम का सामना करना पड़ेगा, ठीक वैसे ही जैसे महिला को प्रसव पीड़ा का सामना करना पड़ता है। ध्यान दें कि श्लोक 17 में कहा गया है कि भूमि शापित है। इस वृत्तांत में जो बात उल्लेखनीय है वह यह है कि श्लोक 14 में सर्प के विरुद्ध एक शाप है, और फरि भूमि के विरुद्ध भी एक शाप है।

ऐसा कोई शाप नहीं है जो परमेश्वर सत्री या पुरुष के विरुद्ध देता है। और मुझे लगता है कि इसका निहितार्थ यह है कि पुरुष और सत्री दोनों ही उद्धार के योग्य हैं, और मानव परिवार के लिए परमेश्वर की आशीर्वाद की योजना पुरानी नहीं है, वह अभी भी चल रही है, और परमेश्वर यह सुनिश्चित करने के लिए हस्तक्षेप करने वाले कदम उठाएगा कि यह उस मानव परिवार में साकार हो जैसा उसने बनाया है और उसने ऐसा पुरुषों और महिलाओं के प्रति अपने परेम के कारण किया है, जिनमें उसकी छवि में अद्वितीय रूप से बनाया गया है। अब, इसके विपरीत, हम जो खोजेंगे, वह यह है कि अध्याय 4 में, आपके पास एक विवरण है कि कैसे परमेश्वर केन के विरुद्ध शाप का न्याय लाता है क्योंकि वह एक छवि हत्यारा है।

उसने अपने भाई हाबलि को मारकर परमेश्वर की छवि को नष्ट कर दिया है। साथ ही, हम पाएंगे कि न्याय के इन तीनों भविष्यवाणियों में से प्रत्येक में एक आशा, एक उम्मीद, प्रकाश की एक झलक, सरूप पर वज्रिय, वह महिला जो इच्छति आशीर्वाद के अनुसार बच्चे पैदा करती है, और फरि, हालांकि यह मनुष्य द्वारा अपने पर्यावरण के विरुद्ध और जमीन पर काम करने के लिए बहुत परेशान करने वाला होगा, फरि भी उत्पादकता होगी, भोजन होगा। श्लोक 20 में, हम देखते हैं कि आदमी, आदम ने अपनी पत्नी का नाम हव्वा रखा क्योंकि वह सभी जीवित प्राणियों की माँ बनेगी।

ईव, जिसका अर्थ जीवति है, और फरि उसे जीवति क्यों कहा जाता है, और इसका शाब्दिक अर्थ है, वह सभी जीवितों की माँ है, के बीच एक शब्द-खेल है। आप समझेंगे कि यह आदमी, आदम की ओर से काफी बड़ा काम है, क्योंकि मुझे लगता है कि उसके मन में गंभीर पश्चाताप और पश्चाताप की भावना है, और इसलिए वह भगवान के वादों में एक पुनर्जीवित विश्वास रखता है कि आदम और हव्वा से एक वरिसत, प्रजनन के माध्यम से एक परिवार आएगा। फरि हम भगवान की ओर से एक दूसरी प्रवृत्ति देखेंगे, जो जलवायु के अनुकूल कपड़े प्रदान करके अपनी कृपा दिखाता है।

और यह वस्त्र चमड़े का है, चमड़े के वस्त्र, जो बलकी भेंट को दर्शाता है, चमड़े को जानवर से लिया जाता है। अब, यह विशेष रूप से यह नहीं कहता है कि

यहाँ एक जानवर के संदर्भ में बलदान है। यह अच्छी तरह से इसका संकेत दे सकता है, और मुझे लगता है कि मूसा के जीवन के संदर्भ में उत्पत्ति की कहानी के पहले पाठकों, उनके द्वारा भगवान की पूजा करने के तरीके के बारे में उनके विचार, शायद यह समझ गए होंगे कि यह ईडन में है, भगवान द्वारा उठाया गया एक कदम जिसके द्वारा परायश्चिति करने के लिए एक बलदान किया जाता है, पाप की क्षमा, और प्रतिस्थापन बलदान के माध्यम से संभव हुआ एक सामंजस्य।

मैं यह भी कह सकता हूँ कि अब हम पाप की प्रवृत्ति, दंड और फिर परमेश्वर के सक्रिय कार्य को देखना शुरू कर रहे हैं, और यही अनुग्रह है, यह परमेश्वर का सक्रिय कार्य है जो उन लोगों के प्रति आशा और परमेश्वर की ओर से नरितर आशीर्वाद प्रदान करता है जिन्होंने पाप का अनुभव किया है और कुछ मामलों में बहुत ही गंभीर दृष्टता का अनुभव किया है, कि आशा है। इसलिए हम यह सवाल पूछ सकते हैं: अध्याय 3 में किए गए पाप के मामले में क्या खो गया था? और हमने पछिली बार इसके बारे में मूल पाप, पाप के स्रोत के रूप में बात की थी, कि एक पुरुष और एक महिला पापी हैं। यह उनका चरित्र, उनका स्वभाव, विचार में उनकी प्रवृत्ति और साथ ही कार्य में भी है। और इसके साथ, नश्चिति रूप से, मूल अपराध भी आता है।

और मैं यह इसलिए कह रहा हूँ, क्योंकि यह स्पष्ट हो जाता है कि पुरुष और महिला बगीचे के पेड़ों में भगवान से छपिते हैं, जो एक वडिंबनापूर्ण मोड़ है क्योंकि बगीचे के पेड़ भगवान द्वारा उनके आशीर्वाद और उनके आनंद के लिए प्रदान किए गए थे, और वहाँ वे भगवान से छपि रहे हैं। भगवान उनका सामना करते हैं, उनसे उनके कबूलनामे को जानने के लिए सवाल उठाते हैं। और इस बीच, नश्चिति रूप से, वे अपनी शर्म और अपराध की भावना दिखाते हैं।

इसलिए न केवल वे एक नए रश्मि का अभ्यास कर रहे थे, भगवान के साथ एक टूटा हुआ रश्मि, बल्कि बगीचे में भगवान के साथ संवाद अब टूट गया है, और वह प्रेमपूर्ण रश्मि, जिसका सुझाव उत्पत्ति की पुस्तक में दिया गया है, खो गया है। लेकिन मैं जो सवाल पूछता हूँ वह यह है कि क्या छर्वा खो गई थी? क्या हुआ, और बगीचे के बाहर जीवन के लिए इसकी क्या मतलब होगा? खैर, छवि निष्ट नहीं हुई थी। जब भगवान ने पुरुष और महिला को बनाया, जब उन्होंने अपनी छर्वा में मानवता का निर्माण किया, तो आपको याद होगा कि मैंने छर्वा के बारे में व्यक्तिवि को शामिल करते हुए बात की थी।

इसलिए, हालाँकि वे पाप का स्रोत बन जाते हैं और उनकी संतान को भी मूल पाप और मूल अपराध की वारिसत मिलती है, जैसा कि रोमियों 5 आयत 12 से 21 में स्पष्ट किया गया है, हम पाएंगे कि वे व्यक्तिविने रहते हैं। वे परमेश्वर की विशेष देखभाल और परमेश्वर की योजना और उद्देश्य में बने रहते हैं जो परमेश्वर की छर्वा में बनाए गए हैं। अब इस बात का सबूत है कि उत्पत्ति में ही छर्वा खो नहीं गई थी।

उदाहरण के लिए, उत्पत्ति अध्याय 9, श्लोक 6 में हम पढ़ते हैं, जो कोई मनुष्य का खून बहाता है, उसका खून मनुष्य ही बहाएगा। क्योंकि परमेश्वर ने मनुष्य या मानवजाति को अपनी छर्वा में बनाया है। इसलिए, हालाँकि यह अध्याय 6 से 8 में बाढ़ के विवरण के बाद भी होता है, फिर भी परमेश्वर मनुष्यों को मानवता में अपने स्वरूप में बनाए जाने के रूप में संदर्भित करता है। नए नियम में एक और संकेत है, याकूब 3 श्लोक 9, जिस जीभ से हम अपने प्रभु और पिता की स्तुति करते हैं, उसी से हम उन मनुष्यों को शाप देते हैं जो परमेश्वर की समानता में बनाए गए हैं।

और इसलिए जेम्स तरक देते हैं कि जीभ अत्यधिक अस्थिर है और इसका उपयोग प्रभु की सूत्रता के लिए किया जा सकता है या दूसरों को शाप देने के लिए किया जा सकता है। और यह कैसे हो सकता है कि कोई व्यक्ति किसी मनुष्य को शाप देने, अस्वीकार करने, उल्लंघन करने, नुकसान पहुंचाने की हमिमते करे, क्योंकि वह मनुष्य परमेश्वर की समानता में बनाया गया है। इसलिए, छवि खो नहीं गई है।

छवि निष्पट नहीं हुई है। मुझे लगता है कि हमें बाइबल में देखना चाहिए, जब हम पुराने नियम को नए सरि से देखते हैं, तो मुझे लगता है कि हमें इस बात का बेहतर अंदाजा होगा कि क्या खो गया था। न केवल परमेश्वर के साथ संबंध टूट गया, बल्कि हम यह भी देखते हैं कि परमेश्वर ने पुरुषों और महिलाओं को जो सम्मान और महिमा दी थी, वह खो गई है।

और इसलिए, जब छवि की बात आती है, तो आपको याद होगा कि छवि का उपयोग शाही व्यक्तियों के लिए किया जाता है जो शासक व्यक्ति होते हैं। और अध्याय 1 में जहाँ यह बताया गया है कि कैसे सभी पुरुष और महिलाएँ ईश्वर की छवि में बनाई गई हैं, यह उस बात की बात करता है जिसमें सम्मान और गौरव का लोकतंत्रीकरण कहता हूँ, सभी अपने अस्तित्व में समान हैं। और इसमें लिंग और आयु शामिल होंगे।

इसमें वे लोग शामिल होंगे जो मानसिक रूप से संघर्षरत हैं या शारीरिक रूप से अक्षम हैं। और जातीयता, यानी सभी पुरुष और महिलाएँ, चाहे उनकी पृष्ठभूमि, जातीयता या शक्ति का कुछ भी हो। दूसरे शब्दों में, जब पुरुषों और महिलाओं को मनुष्य के रूप में बनाने की बात आती है तो वास्तव में कोई वर्ग व्यवस्था नहीं होती है।

अब, यह महत्वपूर्ण है कि ईश्वर की छवि में सृजित सभी पुरुषों और महिलाओं की एकता के भीतर, एक विविधता आवश्यक है, जैसा कि मैंने टिपिणी की, विभिन्न यौन भूमिकाओं, पुरुष और महिला की। और वैसे, अध्याय 1, श्लोक 26 और 27, पति और पत्नी के विपरीत पुरुष और महिला भाषा का उपयोग करते हैं, इसलिए पुरुष और महिला, चाहे विवाह की बात हो या न हो, वे व्यक्ति व्यक्तिगत रूप से ईश्वर की छवि में सृजित हैं।

अब, इस संदर्भ में यह पहचानना सहायक है कि नर और मादा की एक महत्वपूर्ण भूमिका है, प्रत्येक की उस आशीर्वाद को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका है जिस परमेश्वर ने मानव परिवार के लिए ध्यान में रखा है क्योंकि प्रजनन और संतानोत्पत्ति, अध्याय 1, श्लोक 28 में, उस आशीर्वाद का एक हिस्सा है। और इसलिए नर और मादा का उल्लेख श्लोक 26 और 27 में किया गया है और वे, संतानोत्पत्ति में अपनी भूमिका की विविधता के कारण, दोनों आवश्यक हैं, दोनों अनिवार्य हैं। अब, जहाँ हमें विशेष रूप से भजन 8 पर कुछ कषणों के लिए चर्चा करने में मदद मिलती है। भजनकार सृष्टि के वृत्तांत पर विचार करता है और मनन करता है।

ऐसा करते हुए, वह उस महिमा और सम्मान का उल्लेख करेगा जो परमेश्वर ने बगीचे में शुरू में मानवता को प्रदान किया था। वह भजन 8 में संपूर्ण सृजित व्यवस्था के परिमाण, विशालता, चमत्कार के बीच तुलना करता है और फिर बोलता है कि मानवता कतिनी तुच्छ लगती है। इसलिए, भजनकार 5 से 8 तक की आयतों में कहता है, तूने, अर्थात् परमेश्वर ने, मनुष्यों को स्वर्गदूतों से थोड़ा कम बनाया है।

और मुझे लगता है कि यहाँ उनके मन में दो क्षेत्र हैं। एक स्थलीय क्षेत्र है, और फिर देवदूत आकाशीय हैं। और इस

अर्थ में, क्या वे मनुष्य थोड़े नीचे हैं, फरि भी, बेशक, मनुष्य के रूप में महान गरमा रखते हैं, लेकिन देवदूतों के आकाशीय, स्वर्गीय क्षेत्र से थोड़े नीचे हैं?

और यह कहता है, उन्हें, पुरुष और स्त्री को, मुकुट पहनाओ। देखिए, यह वही बात है, जो हमने पहले ही शाही व्यक्तियों, शासक व्यक्तियों के बारे में कहा है, और कहा जाता है कि पुरुष और स्त्री, पद 28 में आशीर्वाद का एक हिस्सा है, वे पूरी सृष्टि पर प्रभुत्व का एक उपाय करेंगे, क्योंकि उन्हें परमेश्वर से उसका व्युत्पन्न अधिकार प्राप्त हुआ है और वे उसके प्रति उत्तरदायी हैं, लेकिन परिणामस्वरूप, उन्हें परमेश्वर द्वारा प्रभावी रूप से शासन करने के लिए सशक्त भी किया जाना चाहिए। महिमा और सम्मान के साथ, हमें कहा गया है।

इसलिए, पद 6 में, आपने उन्हें अपने हाथों के कामों पर शासक बनाया। आपने सब कुछ उनके पैरों के नीचे कर दिया। और फिर, यह एक शासक अधिकारी का चित्रण है जो एक मुकुट, एक सहिसन पर बैठा है, मुकुट और सहिसनारूढ़ है, और प्रभुत्व का प्रयोग करने की एक तस्वीर में पैरों के नीचे शासन कर रहा है।

श्लोक 7, सभी झुंड और झुंड और जंगली जानवर, आकाश में पक्षी और समुद्र में मछलियाँ, सभी जो समुद्र के रास्तों पर तैरते हैं। स्पष्ट रूप से, उत्पत्ति अध्याय 1 के लिए भजनकार की ओर से एक ध्यान। ध्यान दें कि यह छवि नहीं कहता है। मुझे लगता है, यह मानते हुए कि आप उत्पत्ति अध्याय 1 को जानते हैं, यह अनुमान लगाता है। अब, यह वही है जो खो गया है।

छवि नहीं, बल्कि उच्च मानक, उच्च स्थान जो परमेश्वर ने पुरुषों और महिलाओं के लिए रखा था जब उन्हें बनाया गया था और उन्हें संतानोत्पत्ति और प्रभुत्व का कार्य सौंपा गया था। यही वह था जो खो गया था। जब हम खोई हुई चीजों को पुनः प्राप्त करने की संभावना को समझने लगते हैं, तो हमें इस बात पर भरोसा करना होगा, जैसा कि हम उत्पत्ति के माध्यम से, पवित्रशास्त्र के शेष भाग में पाते हैं, कि यह परमेश्वर ही है जो मानव परिवार द्वारा उनके वंशोद्धार में खोई हुई चीजों के लिए कार्य करता है।

और यह इब्रानियों के अध्याय 2 में उठाया गया है। और अगर आप मेरे साथ इब्रानियों के अध्याय 2 को देखें, तो वहाँ इब्रानियों के लेखक ने भजन 8 का हवाला देते हुए वसितार से बताया है कि यह कैसे एक असंततिव था, प्रगतशील असंततिव पर ध्यान दें, जो यीशु मसीह में साकार हुआ। तो मेरे साथ इब्रानियों के अध्याय 2 को देखें, और हम इसे पद 5 में उठाएंगे। यहाँ अध्याय 2 में, इब्रानियों के लेखक इस बारे में बात कर रहे हैं कि कैसे उनके भाई, यानी यीशु, यानी मनुष्य रहे हैं, जिन्होंने प्रभु यीशु के वादे को पूरा किया है, जबकि स्वर्गदूत पति मानवता के लिए वह नहीं कर सकते जो यीशु ने एक पूर्ण मानव व्यक्ति और प्रभु के पूर्ण आज्ञाकारी सेवक के रूप में पूरा किया। तो, पद 5, यह स्वर्गदूतों के अधीन नहीं है कि उसने आने वाले संसार को अधीन किया है, लेकिन जिसके बारे में हम बात कर रहे हैं।

लेकिन एक जगह है, और नश्चिती रूप से, उस समय, कोई अध्याय और श्लोक नहीं है, और इसलिए जब कहीं की बात आती है, तो वह हमारे भजन 8 को ध्यान में रखता है। मनुष्य क्या है कि तु उसका स्मरण करे, हे मनुष्य के पुत्र, तू उसकी परवाह करे, तूने उसे स्वर्गदूतों से थोड़ा कम बनाया है, और तूने उसे महिमा और सम्मान का मुकुट पहनाया है और सब कुछ उसके पैरों के नीचे कर दिया है। अब, यहाँ इब्रानियों के लेखक की टिप्पणी है।

सब कुछ उसके अधीन करके, परमेश्वर ने कुछ भी नहीं छोड़ा जो उसके अधीन न हो।

फरि भी, वर्तमान में, हम सब कुछ उसके अधीन नहीं देखते हैं, लेकिन हम यीशु को देखते हैं, और यह इब्रानियों के लेखक की ओर से एक बहुत ही महत्वपूर्ण अभिव्यक्ति है, लेकिन इसके विपरीत। इसलिए अंततः समाधान यीशु में पाया जाता है, जिससे स्वर्गदूतों से थोड़ा कम बनाया गया था, अब यीशु मसीह के पुनरुत्थान के कारण। उसने अपनी मानवता में, पुनर्जीवित मानवता, महिमा और सम्मान प्राप्त किया है, और यह उन सभी के लिए बहाल किया गया है जो मसीह यीशु में हैं, जिन्होंने उसका जीवन, उसका पुनरुत्थान जीवन प्राप्त किया और स्वीकार किया है, और ऐसा करने में, परमेश्वर मसीह यीशु के माध्यम से, फरि से, अपनी महिमा और अपने सम्मान को साझा करता है।

आगे पढ़ते हुए, हम पद 9 में पाते हैं कि कियोंकि उसने मृत्यु का सामना किया, यह कतिना आश्चर्यजनक अवलोकन है कि एक शासक व्यक्तियों के रूप में आने के बजाय, यीशु मसीह को उसकी इच्छा के कारण, उसके पिता, परमेश्वर की इच्छा के प्रति उसके स्वैच्छिक समर्पण के कारण, मृत्यु का सामना करने के लिए, किस उद्देश्य से, परमेश्वर द्वारा प्रसूत किया गया? ताकि परमेश्वर की कृपा से, वह सभी के लिए मृत्यु का स्वाद चख सके और कई पुत्रों को महिमा में ला सके, यह उचित था कि परमेश्वर, जिसके लिए और जिसके माध्यम से सब कुछ मौजूद है, उनके उद्धार के लेखक को पीड़ा के माध्यम से परिपूर्ण बनाए। और यहाँ, हमारे पास क्रूस पर मसीह के प्रायश्चित्त कार्य का स्पष्ट संदर्भ है। और यह वही है जो इस संदर्भ में काम कर रहा है कि कैसे भविष्य अब मसीह यीशु में हमारे जीवन का एक हिस्सा है।

यह हमारे प्रभु यीशु के दूसरे आगमन के साथ पूर्ण होगा। और इस बीच, हम आगमन का आनंद ले रहे हैं और उसका अनुभव कर रहे हैं। राज्या की पेशकश की जा चुकी है।

जो लोग हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा प्रदान किए गए राज्य को प्राप्त करते हैं और उसमें प्रवेश करते हैं, वे सम्मानित होने की प्रक्रिया में हैं। हम महिमा प्राप्त करने की प्रक्रिया में हैं। यूहन्ना अध्याय 17 में पिता से यीशु की प्रार्थना में, वह पिता से प्रार्थना करता है कि वह उसे सम्मान और महिमा का प्रकटीकरण पुनः प्रदान करे जो उसे मनुष्य बनने से पहले और इस वर्तमान बुरे युग की परीक्षाओं और कठिनाइयों को सहने से पहले पिता के साथ मिला था, जैसा कि पौलुस ने उल्लेख किया है।

और सारा पाप और भ्रष्टता और वह सब यीशु के इरद-गरिद हर तरह से घूम रहा है। और फरि भी वह अपनी आज्ञाकारिता में दृढ़ रहता है, वह करता है जो पहला आदम करने में विफल रहा। और इसलिए, हम जो खोजते हैं, वह फरि से दोहराते हुए, वह है कि हम सभी के लिए जो इस महान सुसमाचार को सुनेंगे, पापों और दासता से मुक्ति का यह सुसमाचार, और कैसे परमेश्वर ने हमारे लिए अपना जीवन, अपना सम्मान और महिमा रखी है।

यीशु यूहन्ना 17 में अपने शिष्यों के बारे में प्रार्थना करते हैं और कहते हैं, और उन्हें, अर्थात् शिष्यों को, मेरी महिमा दो, जो हम पिता और पुत्र, और मेरा आनन्द भी साझा करते हैं। तो, जो खो गया है, सम्मान और महिमा, और चल रहा है, वह है परमेश्वर की, फरि से, बचाव की योजना। चूंकि हम अध्याय 3 की आयत 22 में पाते हैं, वह व्यक्ति अब हम में से एक जैसा बन गया है, हम फरि से बहुवचन में आते हैं जहाँ परमेश्वर अपने आप को बहुवचन के रूप में संदर्भित करते हुए बोल रहा है।

मनुष्य अब हम में से एक बन गया है, जो अच्छाई और बुराई को जानता है। मैं रुककर एक प्रश्न पर बात करना चाहूंगा जो त्रैक परमेश्वर से संबंधित है, पूरा प्रश्न कि ऐसा कैसे है

क एक परमेश्वर है और फरि भी परमेश्वर के भीतर अनेकता प्रतीत होती है। और अगर हम उत्पत्ति अध्याय 1 पर वापस जाएँ, तो हम देखेंगे कि इसे श्लोक 26 और 27 में कैसे आगे लाया गया है।

26 में लिखा है, आइए हम मानवता को अपनी छवि में बनाएँ। इसमें बहुवचन का वचन है। और फरि, जब हम 27 वर्ष के हो जाते हैं, तो हम एकवचन और बहुवचन को काम करते हुए देखते हैं।

तो, परमेश्वर ने मानवता को अपनी छवि में बनाया। तो, यहाँ हमारे पास एकवचन है। परमेश्वर की छवि में, उसने उनकी मानवता बनाई।

नर और मादा, उसने उन्हें बनाया। इसलिए, श्लोक 26 में, हमारे पास बहुलता है। श्लोक 27 में, हमारे पास परमेश्वर की एकता है।

यह मानवता में भी संकेतित है, जहाँ श्लोक 27 में कहा गया है, उसने उसे बनाया, यानी एक एकीकृत मानवता, और फरि विविधता, नर और मादा, उसने उन्हें बनाया। अब, आइए थोड़ा विचार करें कि बाइबल क्या सिखा रही है, सबसे पहले उत्पत्ति के संदर्भ में। उत्पत्ति के संदर्भ में, शुरू से ही एक वाक्य है कि एक ईश्वर है, और फरि भी ईश्वर के भीतर एक बहुलता है।

मैं सुझाव दूंगा कि हम आयत 2 को फरि से देखें और पाएं कि किम से कम हम यह तो कह सकते हैं कि पानी के ऊपर मंडराता हुआ परमेश्वर का आत्मा यह संकेत दे रहा होगा कि परमेश्वर का आत्मा परमेश्वर की एकल एकता के भीतर बहुलता बनाता है। यह तर्क-एकता नहीं कहता है, लेकिन मुझे लगता है कि हम यह कहने में सुरक्षित हो सकते हैं कि यहाँ बहुलता का संकेत दिया गया है। अब, क्या उत्पत्ति में कहीं और भी यही मामला है? निश्चित रूप से, यह परमेश्वर के प्रति ईसाई स्थिति है।

और उसके अस्तित्व में एकता है, और उसके अस्तित्व में भी, हमारे पास व्यक्तियों की बहुलता है: पति, पुत्र और पवित्र आत्मा। लेकिन क्या हम उत्पत्ति में ही कुछ ऐसा पा सकते हैं जो बहुलता का और अधिक संकेत, संकेत दे? और फरि हम जो करना चाहते हैं वह है उत्पत्ति अध्याय 18 की ओर मुड़ना, और यह अब्राहम के जीवन में है। और यह तीन आंगंतुकों का एक बहुत ही आकर्षक विवरण है, और यह अब्राहम के शविर स्थल पर है।

और ये तीन आंगंतुक अपनी यात्रा में आ रहे हैं, और जैसा कि अब्राहम को करना चाहिए, वह उन्हें आराम करने के लिए एक जगह और भोजन की व्यवस्था करके उनका आतिथ्य करता है। लेकिन मेरे साथ ध्यान दें, यदि आप उत्पत्ति 18, श्लोक 1 को देखें, तब प्रभु अब्राहम को मम्मे के बड़े पेड़ों के पास दिखाई दिए, जब वह दान की गर्मी में अपने तम्बू के द्वार पर बैठा था। अब्राहम ने देखा और तीन लोगों को देखा, ऐसा कहा जाता है।

जब तीन पुरुषों की बात की जाती है तो इसे ध्यान में रखें। और फरि, श्लोक 10 पर जाएँ। फरि प्रभु और मैं चाहते हैं कि आप ध्यान दें कि यहाँ प्रभु संभवतः यहोवा को संदर्भित करता है।

मैं अगले साल इसी समय तुम्हारे पास अवश्य लौटूंगा, और तुम्हारी पत्नी सारा को एक बेटा होगा। तो, तीन पुरुषों में से एक वास्तव में, भगवान परमेश्वर है। ध्यान दें कविह श्लोक 13 में कहता है, तब परभु, अब यह नशिचंति रूप से ईश्वरीय नाम यहोवा है, परभु ने अब्राहम से कहा, तो फरि से, तीन पुरुषों में से एक बोल रही है, और कथा तीन पुरुषों में से एक को परभु के रूप में पहचानती है।

आइए फरि से पद 16 पर नजर डालें। जब पुरुष जाने के लिए उठे, पद 17, तब परभु ने कहा, तुम यह आगे-पीछे देखते हो, आगे-पीछे होने से पता चलता है कि उनका रूप ऐसा है मानो वे मनुष्य हैं। लेकिन वास्तव में, वे मनुष्य नहीं हैं।

वे मनुष्य नहीं हैं, बल्कि वे, जैसा कि हम देखेंगे, ईश्वर और स्वर्गदूत हैं। अध्याय 19 पर ध्यान दें, जहाँ दो स्वर्गदूतों के बारे में कहा गया है। तो, वहाँ एक बहुलता है, तीन, जो पुरुषों के रूप में प्रकट होते हैं, लेकिन पुरुषों के रूप में अवतरति नहीं होते हैं।

परभु यीशु मसीह के साथ जो हम पाते हैं, वह नहीं, जो केवल मनुष्य के रूप में नहीं, बल्कि पूरी तरह से मनुष्य बन गए। और हमारे पास परभु है, और फरि हमारे पास दो स्वर्गदूत हैं, जो मनुष्य के रूप में भी दिखाई देते हैं। तो, उत्पत्ति अध्याय 18 में, कुछ संकेत हैं कि परमेश्वर की एकता में परमेश्वर की विविधता का रहस्य भी शामिल है।

यह इस बात को समझाने में सहायक हो सकता है कि सृष्टि के वृत्तांत में क्या हो रहा है। अब, यदि हमारे पास परमेश्वर है और हमारे पास आत्मा है, तो हम यीशु मसीह के बारे में क्या कहते हैं? क्या हमारे पास कोई संकेत है कि सृष्टि के वृत्तांत में यीशु मसीह शामिल है? खैर, हमें आश्चर्य नहीं है कि उसका नाम यहाँ उत्पत्ति के वृत्तांत में नहीं मिला है। बल्कि, हमें उसकी भूमिका मिलती है क्योंकि सृष्टि के परमेश्वर के पर्यवेक्षण में एक मध्यवर्ती चरण शामिल है।

और यह बोले गए शब्द के द्वारा परमेश्वर की मध्यस्थता है। जब यीशु मसीह की बात आती है, तो हमें नए नियम में इसका स्पष्टीकरण मिलता है। दो मार्ग विशेष रूप से ऐसे हैं जो सृष्टि के समय रचनात्मक शब्द में शामिल परमेश्वर के पुत्र की उपस्थिति के बारे में बात करते हैं।

और यूहन्ना 1 आयत 1-5 स्पष्ट रूप से सृष्टि में जो कुछ हम पाते हैं उसका प्रतबिंब है, जैसा कि सुसमाचार लेखक यूहन्ना, यीशु की पहचान पर विचार करता है। तो, बस उस पहले अध्याय को पढ़ते रहें और यह अधिक से अधिक स्पष्ट हो जाता है, किसी भी तरह से विवादित नहीं, कि वह यीशु के बारे में वचन के रूप में बात कर रहा है। शुरुआत में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था।

और फरि यह कहता है, और वचन परमेश्वर था। इसलिए, यह नहीं कहा गया है कि वह परमेश्वर बन गया, बल्कि, वह अपने अस्तित्व में, दिव्य के रूप में पहचाना गया था। वह शुरुआत में परमेश्वर के साथ था।

उसके द्वारा ही सब कुछ बना, उसके बिना कुछ भी नहीं बना जो बना है। और वह जीवन था, और वह जीवन सारी मानवजातों का प्रकाश था। प्रकाश अंधकार में चमकता है, और अंधकार ने उस पर विजय नहीं पाई है।

और फरि कुलुससयिों 1 आयत 15 में, पुत्र अदृश्य परमेश्वर की छवि है, जो प्रमुख है, सारी सृष्टि में ज्येष्ठ है। ज्येष्ठ शब्द कानूनी भाषा है, जैविक भाषा नहीं। जैसा कि आप जानते हैं, हबिरू जीवन में ज्येष्ठ की प्रथा पर एक चित्रण है जहाँ ज्येष्ठ अपने पिता का उत्तराधिकारी होता है।

और इसलिए ज्येष्ठ का अर्थ है कि वह वास्तव में पिता की भूमिका निभा रहा है, जो ज्येष्ठ के रूप में, पिता द्वारा उसे दी गई चीजों को वरिसत में लेता है। क्योंकि उसी में, श्लोक 16, सभी चीजें बनाई गईं, स्वर्ग और पृथ्वी की चीजें, दृश्यमान और अदृश्य, चाहे सहिसन हों या शक्तियाँ या शासक या अधिकारी, सभी चीजें उसके द्वारा और उसके लिए आश्चर्यजनक रूप से बनाई गई हैं। वह सभी चीजों से पहले है, और उसी में, सभी चीजें एक साथ टिकी हुई हैं।

इसलिए, हम इन दो आयतों से यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि यीशु मसीह सृष्टि में उतना ही शामिल था जितना कि पिता और आत्मा। मैं यह बताना चाहता हूँ कि बेगीचे के बाहर जीवन में आगे बढ़ने से पहले हमारी समझ में यह इतना महत्वपूर्ण क्यों है। और यह तब है जब प्राचीन नकिट पूर्वी देवताओं और देवियों की विशेषता बहुदेववाद और नए नियम में हबिरू शास्त्रों के बीच अंतर की बात आती है और पुष्टि करते हैं कि ईश्वर के भीतर आपके पास व्यक्तता है।

और इसलिए, इसका मतलब यह है कि अगर आप आज के धर्मों पर नजर डालें, तो ईश्वर, भले ही वह बहुदेववादी न हो, ईश्वर एक-व्यक्ति, एक व्यक्ति है। ईश्वर के लिए प्रेम करने के लिए कोई दूसरा व्यक्ति नहीं है। प्रेम तो सृष्टि के बाद आता है।

इसलिए, प्राचीन नकिट पूर्व में, बहुदेववाद के साथ, यह मानवीय कल्पना का एक भेददा प्रतनिधित्व है। जब धर्मों की बात आती है, उदाहरण के लिए, इस्लाम के लिए, केवल एक व्यक्ति है जिसे उसे अपनी रचना के प्रति प्रेम दिखाने के लिए बनाना पड़ता है। लेकिन ईश्वर के भीतर, आपके पास पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के बीच अनंत और पूर्ण और पूर्ण रूप से प्रेम है।

मुझे 1 यूहन्ना 4, पद 8 में इस पर विचार करने दीजिए। जो कोई प्रेम नहीं करता, वह परमेश्वर को नहीं जानता, क्योंकि परमेश्वर प्रेम से ही पहचाना जाता है। परमेश्वर प्रेमी है, और यीशु मसीह प्रेमी है, वह परमेश्वर को प्राप्त करता है। इस तरह परमेश्वर ने हमारे बीच अपना प्रेम दिखाया।

दूसरे शब्दों में, ईसाई धर्म में, हम प्रेम और ज्ञान के बारे में अमूर्त तरीके से, सिर्फ विचार और धारणाओं के संदर्भ में बात नहीं करते, बल्कि इस प्रेम की एक बहुत ही व्यावहारिक, ठोस अभिव्यक्ति के रूप में बात करते हैं। तो, अगर हम कहें, तो यह प्रेम क्या है जिसे परमेश्वर अपनी विशेषता के अनुसार प्रकट करता है? इस तरह से परमेश्वर ने हमारे बीच अपना प्रेम दिखाया। उसने अपने पुत्र, एक इकलौते पुत्र को संसार में भेजा ताकि हम उसके द्वारा जीवन पा सकें।

यह प्रेम है। ऐसा नहीं है कि हमने प्रेम को प्रेरित किया, बल्कि यह कि उसने, परमेश्वर ने, हमसे प्रेम किया और अपने पुत्र को हमारे पापों के प्रायश्चित के लिए बलिदान के रूप में भेजा। इसलिए, परमेश्वर का प्रेम इस प्रकार का है कि यह उमड़ता है, यह बाहर जाता है, यह स्वयं के भीतर निर्देशित होता है, एक परिपूर्ण, संपूर्ण प्रेम।

और परमेश्वर का चरित्र, उसका स्वभाव, वहाँ है । यह एक बहिरिवाह हो सकता है। और यह परमेश्वर के भीतर आत्मा द्वारा है जो एक साथ ला रहा है। आप उसे संयोजक के रूप में सोच सकते हैं। मैं खुद प्रेम कहने में संकोच करता हूँ, क्योंकि जब वह एक व्यक्ति होता है तो यह एक 'यह' जैसा लगता है।

लेकिन इसे ध्यान में रखते हुए, हमारे पास परमेश्वर पति है जो प्रेमी है, यीशु मसीह जो प्रेम प्राप्त करने वाला है, प्रयितम है, और यह आत्मा है जो प्रेमपूर्ण है जो एक परिपूर्ण सामंजस्य, परमेश्वर के प्रेम को साथ लाती है। यह परमेश्वर का प्रेम है, फरि, जिसने परमेश्वर को सृष्टि करने के लिए प्रेरित किया। और यही वह उद्देश्य और योजना है जो परमेश्वर ने मानवता के लिए बनाई है क्योंकि वह अपने प्राणियों और अपने प्रेम के प्रति दयालु है।

और वह अपने सर्वशक्तिमान और शक्तिशाली तरीकों से यह सुनिश्चित करेगा कि प्रेम संबंध पूरी तरह से और पूरी तरह से बहाल हो जाए। और यह केवल प्रेरणा के माध्यम से, स्वयं परमेश्वर की ओर से प्रेम की शुरुआत के माध्यम से ही पूरा किया जा सकता है। और यह कि प्रयितम के माध्यम से, उसके पुत्र, यीशु मसीह के माध्यम से, वह प्रेमपूर्ण मेल-मिलाप हमारी ओर से पूरा होता है।

हमारे अगले सत्र में, हम बगीचे के बाहर के जीवन के बारे में सोचना जारी रखेंगे।

यह डॉ. केनेथ मैथ्यूज और उत्पत्तिकी पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 4 है, बगीचे की कहानी, भाग 2, उत्पत्ति 2:4-3:24।